बहाग बिहु

डॉ. नंदिता राजबंशी
असिस्टेंट प्रोफेसर,हिंदी विभाग
प्रागज्योतिष महाविद्यालय
गुवाहाटी
असम

'चते गै गै (चैत्र का महीना बीतते-बीतते)

पालेहि बहागी,(बैसाख आ पहुँचा),

फुलिले भेबेली लता,(भेबेली लता में फुल खिलने लगे)

कै नो कै थाकिले (कितनी भी कहें)

ओरके नपरे(खत्म नहीं होती)

बहागर बिहुरे कथा'(बहाग बिहु की कथा)

बहाग बिहु सिर्फ गीत-नृत्य आनंदोत्सव ही नहीं इसके प्रत्येक छन्द में असम के प्राकृतिक,सामाजिक चित्र,रीति-नीति,लोक विश्वास,संस्कृति छिपा है।प्रकृति के साथ सहचार्य रखते हुए असमीया लोग बसंत उत्सव बिहु उत्सव पालन करते आ रहे हैं। शिशिर के बाद वसंत ऋतु एक संतुलित मौसम है। इस मौसम में चारों ओर हरियाली होती है। पेड़ों पर नये पत्ते आते हैं,रंग बिगंगेफूल खिलते हैं । पौराणिक कथाओं में वसंत को कामदेव का पुत्र कहा गया है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में वसंत में वसंत पंचमी, शिवरात्रि, होली मनाए जाते हैं। जयशंकर प्रसाद के चन्द्रगुप्त नाटक में होली के पर्व पर सुवासिनी यौवन में मदमस्त होकर गाती है-

तुम कनक किरण के अंतराल में

लुक-छिप कर चलते हो क्यों?

नम मस्तक गर्व वहन करते

यौवन के घन,रस कन दरते

हे लाज भरे सौंदर्य!

बता दो मौन बने रहते हो क्यों?

असम में चैत्र महीने के अंतिम दिन(संक्रांति)से बहाग बिहु मनाया जाता है। यह समय असमीया नव वर्ष के रूप में भी मनाया जाता है। साल के प्रारंभ में खेत जुताई से पहले किसान हर्ष उल्लास के साथ सूर्य,अग्नि पृथ्वी,आकाश आदि देवता को संतुष्ट करने के लिए पूजा करते हैं। पहले दिन 'गरु बिहु' मनाया जाता है। गाय-बैल,पालतु जानवर ग्रामीण जीवन का मूलाधार है। इसलिए बिहु के प्रथम दिन पालतु जानवरों की दीर्घायु कामना करते हुए सबेरे नहा धुला कर नवीन पगहा पहनाया जाता है। लौकी-बैंगन खिला कर गया जाता है-

दीघलति दीघल पात (दीघलति-वनस्पति केलम्बे पत्ते)

माखि मारों जात जात, (मखियति-वनस्पति मारो)

लाउ खा,बेङेना खा, (लौकी खा,बैगन खा)

बछरे बछरे बाढ़ि जा, (साल-साल बढ़ता जा)

मार सरु बापेर सरु, (माँ छोटी,बाप छोटा)

तइ हबि बर गरु । (तू बन जा बड़ा गौ)

दूसरे दिन 'मानुह बिहु' मनाया जाता है। बड़ों से आशीर्वाद लिया जाता है।बिहुवान (उपहार)एक दूसरे को दिया जाता है।यह असमीया नये साल का प्रथम दिन भी है। असमीया करघेवाली युवती गाती है-

अतिकै चेनेहर मुगारे महुरा (मूँगे का अटेरन बहुत ही प्यारा है)

अतिकै चेनेहर माको (भरनी भी बहुत ही प्यारी है)

तातोकै चेनेहर बहागर बिहुटि (उससे भी प्यारा है बहाग बिहु)

नेपाटि केनेकै थाकों? (इसे मनाए बिना हम कैसे रहे?)

तीसरे दिन 'गोसाई बिहु' मनाया जाता है।इस दिन नामघर- मंदिर में जाकर ईश्वर से नये साल में सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना की जाती है।धीरे धीरे धर्मीय विश्वास के स्थान पर आनंद उत्सव प्रधान हो गया।

बिहु आरंभ होते ही गाँव के युवक युवती खुले मैदान में बिहु गीत गाकर नृत्य करते हैं।

ढोल बाइ ढुलीया खोले बाइ खुलीया(ढोल बजाते है ढुलीया,खोल बजाते है खुलीया)

कार घरर नाचनी नाचे;(किसके घर की नाचनेवाली नाचती है?)

ओचर चापि चापि नाहिबा नाचनी(पास न आना नाचनेवाली)

तोमार गात मोहिनी आछे।(तुम्हारे शरीर में सम्मोहन है)

इन गीतों में प्रेम प्रीति,विरह के चित्रकल्प उभर आए हैं। बिहु के अंत में बिननि(कातरता भरा आह्वान)गाया जाता है-

ढोलेटि कान्धत लैए नाचनि बजालेनो कि हब?(ढोलक कंधे पर लेकर बजाने से क्या होगा?)

बजालेनो कि हब चेनाइ बुलि मातोता नाइ(प्रियतम बुलानेवाला नहीं है तो बजाने से क्या होगा)

केरु गाम खारु बनाले नो कि हब?(काण-हाथ का गहना बनाने से क्या होगा?)

बनाले नो कि हब काणफुलि पिंधोता नाइ?(जब पहनने वाला ही नहीं है बनवाने से क्या होगा?)

बिहु नाम का एक जोजना इस प्रकार है-

पहारो आमारे भैयामो आमारे बरनै जीवनर साको(पहाड़ भी हमारा,मैदान भी हमारा,बर नदी जीवन का सेतु है)

अतिकै चेनेहर बहागर बिहुटि नापाति केनेकै थाको(सबसे अपना बहाग बिहु को बिना मानाए कैसे रहे?)

बिहु नाम के साथ ही छोटे छोटे जात नाम गाया जाता है,कुछ उदाहरण इसप्रकार है-

समनियाइ जोकाब मोक(हम उर्मवाले चिढ़ाऐंगे मुझे)

दिबा जानो मरमर मात(दोगी क्या प्रेम से आवाज?)

बिहु गीतों में प्राकृतिक सौंदर्य के अतिरिक्त धार्मिक विश्वास, ग्रामीण जीवन के सुख-दुख,आशा-निराशा भी अंकित है।

गाँव के युवक छोटी टोली बनाकर हुसरि गीत गाते हैं।यह टोली घर घर जाकर मांगलिक गीत गाती है और गृहस्थ को आशीर्वाद देती है।

देउतार पदुलित गोंधाइछे मालती।(गृहस्थ के घर में सुगंधित मालती है)

केतेकी मलेमलाय ऐ गोविंदाइ राम॥(हे गोविंद,राम केतकी सुगंधित है)

आमि जे आछो हुसरि गाइ।....(हमलोग हुसरि गा रहे हैं)

इन गीतों का वर्ण्य विषय श्रीकृष्ण,राधा,सत्यभामा आदि के जीवन के विविध प्रसंग होते हैं।

बहाग बिहु का लोकाचार व खाद्याभाष भी उल्लेखनीय है। बिहु में तिल गुड़ से बने लाडु-पिठा के साथ ही मौसम के विविध शाग सब्जी खाने का भी रिवाज है। आमरलि (कच्चा आम) खाने का रिवाज है।इसे खाने का विशेष तात्पर्य है। यह रक्तचाप दमन करताहै। साल भर के लिए रोग निरामय के लिए उपयोगी है। चिरता (वनस्पति),कच्चा हलधि का रस खाया जाता है।पचला(खाने योग्य केले का पौधा) यह पेट रोग निरामय के लिए उपयोगी है। चर्म रोग निरामय के लिए हलधि का उवतन लगाया जाता है। बिहु के सातवें दिन सात शाक खाने का रिवाज है। इसप्रकार बहाग बिहु के साथ जुड़े खाद्य अभ्यास प्राकृतिक रूप से रोग प्रतिरोधक है। बिहु का लोकाचार प्रमाण है कि प्रकृति के साथ सहचर्य ही मानव जाति के विकास के लिए अनिवार्य है।

अंत में कह सकते हैं कि असम जाति-जनजातियों की भूमि है। असमीया जनजातियों में बोडो-कछारी, राभा, लालुंग, गारो, कार्वि, मिचिंग,देउरी,चुटीया,डिमाचा आदि गोष्ठी का बिहु उद्भव विकास में अवदान है।

अब तो बिहु मंच में ही रह गया है।परम्परा के स्थान पर दिखावा का बोलावाला हो गया है।भूमंडलीकरण के कारण विदेशी दिखावेपन से मुक्ति के लिए हमें हमारे संस्कृति,इतिहास,साहित्य का पुनः पाठालोचन, अध्ययन,मनन,चिंतन, अनुशीलन करना होगा। ऐसी स्थिति में असमीया बिहु में अंतर्निहित जीवन दर्शन का अनुशीलन प्रत्येक असमीया के आत्मगौरव, स्वाभिमान,अस्तित्व रक्षा के लिए अनिवार्य है। भूपेन हाजरिका के शब्दों में –

‘बिहुटि बछरि आहिबा(हर वर्ष बिहु आना)

असमी आइके जगाबा(असममातृ को जगाना)

बिपदर कालतो (विपत्ति काल में)

माह हालधीरे जातिटोर (हलधि से असमीया जातिके)

देह मन धुवाबा(शरीर मन को धुलाना)

बिहुटि बछरि आहिबा(बिहु हर साल आना)”